जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

धर्मात्मा के लौकिक कार्य सहज ही सधें तो सधें, पर उनके लक्ष्य से धर्मसाधन करना ठीक नहीं है।

- बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-15

वर्ष : 25, अंक: 6 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जून (द्वितीय) 2002 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. अनुभवप्रकाश जैन एवं पं. संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

36 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

देवलाली (नासिक) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली के तत्त्वावधान में आयोजित 36 वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर दिनांक 10 मई से 27 मई तक अनेक सफल आयोजनों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

दिनांक 10 मई को शिविर का उद्घाटन श्री एस. पी. जैन (एस. पी. कैपिटल फाइनैन्स, मुम्बई) के करकमलों से, श्रीमती मीनाबेन अरुणकुमारजी दोशी मुम्बई की अध्यक्षता एवं श्री कमलकुमारजी बड़जात्या के मुख्यातिथ्य में संपन्न हुआ। इससे पूर्व श्रीमती मीनाबेन अरुणकुमारजी दोशी मुम्बई परिवार ने झण्डारोहण किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि डॉ. सुभाषजी चांदीवाल मुम्बई, श्री पूनमचन्दजी लुहाड़िया मुम्बई एवं श्री जयन्तिभाई धनजीभाई दोशी मुम्बई थे।

● विभिन्न स्थानों से पधारे हुये 972 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित हुये ● प्रशिक्षण में 225 प्रशिक्षणार्थी तथा प्रौढ़ एवं अन्य कक्षाओं में 400 शिक्षार्थी सम्मिलित हुये ● प्रात: 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक विविध कार्यक्रमों द्वारा प्रतिदिन 13 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित हुई ● 40 विद्वानों द्वारा विविध कार्यक्रमों से समाज लाभान्वित ● 38 हजार 957 रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा ● 15 हजार 594 रुपये के प्रवचन एवं भजनों के कैसिट एवं सी. डी. बिकीं ● वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक के अनेक आजीवन एवं वार्षिक सदस्य बने।

विद्वानों में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पं. रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी, ब्र. यशपालजी, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, ब्र.हेमचंदजी 'हेम', पं. पूनमचंदजी छाबड़ा, पं. अभयकुमारजी शास्त्री छिंदवाड़ा, पं. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, पं. कोमलचंदजी, पं. कमलकुमारजी, श्रीमती कमलाजी भारिल्ल, पं. नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पं. विरागजी शास्त्री, पं. धर्मेंद्रजी शास्त्री, पं. दिनेशभाई शहा, पं. अभयजी शास्त्री खैरागढ़, पं. अनिलजी शास्त्री, पं. अभिनयजी शास्त्री, श्रीमती मोनाजी भारिल्ल, डॉ. उज्ज्वलाजी शहा, ब्र. विमलाबेन व श्रीमती राजकुमारीजी मंचासीन थीं।

दिनांक 14 मई को आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी की 113 वीं जन्मजयन्ती मनाई गयी। इस अवसर पर प्रात: 6 से 6.30 तक प्रभात फेरी निकाली गई, 6.30 से 7 बजे तक बधाई का कार्यक्रम हुआ, 7.15 से 8.15 तक विधान-पूजन, 8.15 से 9.15 तक गुरुदेवश्री का सी. डी. प्रवचन, 9.30 से 11 बजे तक गुरुदेवश्री की गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया; जिसमें डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल आदि अनेक वक्ताओं ने गुरुदेवश्री के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। डॉ. भारिल्लजी ने कहा कि इस युग में आध्यात्मिक क्रांति के प्रचार-प्रसार में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अमूल्य योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है।

दैनिक कार्यक्रम - शिविर के दौरान प्रतिदिन प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम चलते थे, जिनका संक्षिप्त विवरण इसप्रकार है - प्रात: 6.30 से 8.00 बजे तक पूजन-विधान, 7.00 से 8.15 बजे तक प्रशिक्षण कक्षाएँ, 8.30 से 9.30 बजे तक गुरुदेवश्री का सी. डी. प्रवचन, 9.30 से 10.30 बजे तक डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का प्रवचन, 10.30 से 11.15 बजे तक प्रौढ़ कक्षायें।

दोपहर में 2 से 3.30 बजे तक प्रशिक्षणार्थी अभ्यास कक्षायें तथा इसी समय प्रौढ़कक्षा होती थी। 2.30 से 3.15 बजे तक व्याख्यानमाला, 3.15 से 4 बजे तक प्रौढ़कक्षाएँ एवं 4.15 से 5.30 बजे तक प्रशिक्षण कक्षायें चलती थीं।

सायं 6.30 से 7.15 बजे तक बाल एवं प्रौढ़ कक्षा, 7.15 से 7.45 बजे तक जिनेन्द्र भक्ति, 7.45 से 9.30 बजे तक दो प्रवचन, 9.30 से सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

प्रवचन एवं व्याख्यान - इस अवसर पर देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रात: समयसार परिशिष्ट एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक के नौवे अध्याय पर मार्मिक प्रवचन हुये।

इसके अलावा दोपहर एवं रात्रि की व्याख्यानमाला में पं. रतनचन्दजी भारिल्ल, पं. अभयकुमारजी शास्त्री, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, ब्र. हेमचंदजी 'हेम', पं. पूनमचन्दजी छाबड़ा, डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री, पं. शान्तिकुमारजी पाटील, पं. हरकचंदजी बिलाला, पं. दिनेशभाई शहा, पं. परमात्मप्रकाशजी, पं. कोमलचन्दजी, पं. कमलचन्दजी, पं. नन्दकिशोरजी काटोल, पं. विपिनजी शास्त्री, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल, पं. रमेशजी 'मंगल', पं. अशोकजी वानरे शास्त्री, पं. कीर्तिजयजी गोरे शास्त्री, पं. सन्मतिजी शास्त्री, पं. सुनीलजी जैनापुरे शास्त्री, पं. ऋषभजी शास्त्री, पं. पीयूषजी शास्त्री, पं. विरागजी शास्त्री, पं. अभयजी शास्त्री, पं. धर्मेंद्रजी शास्त्री, पं. महेन्द्रजी शास्त्री, पं.

(शेष पृष्ठ-4 पर ....)

सम्पादकीय –

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन

8

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

दसवें सर्ग में ह्न तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के द्वारा दिव्यध्वनि के रूप में हुये दिव्य ज्ञान–आलोक से असंख्य भव्य जीवों के मिथ्यात्व–अंधकार का अभाव तो हुआ ही, अनेकों ने मुनिपद धारण किया। तीर्थंकर भगवान की उस दिव्यध्वनि का सारांश इस दसवें सर्ग के 163 श्लोकों में प्रतिपादित है, जो संक्षेप में इसप्रकार है ह्न

धर्म सर्व सुखों की खान है, वैसे तो रत्नत्रय धर्म साक्षात् मोक्ष का ही हेतु है; परन्तु जबतक स्वभावसन्मुख होने का पूर्ण पुरुषार्थ नहीं हो पाता, तबतक अपनी–अपनी योग्यतानुसार साधर्मी जीव को चार निकाय के देवों की पर्याय में और मनुष्य पर्याय में इन्द्रियसुख सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र रूप धर्मसाधना के साथ हुए उत्कृष्ट शुभभावों के फलस्वरूप अतिशय पुण्यबंध होने से प्राप्त होता है।

किसी कवि ने कहा भी है ह्न

धर्म करत संसार सुख, धर्म करत निर्वाण।
धर्म पन्थ साधे बिना, नर तिर्यंच समान।।

ज्ञानी धर्मात्मा जानते हैं कि यद्यपि संसार में निराकुल सुख नहीं है, चारों गतियों में दुख ही दुख है; तथापि तुलनात्मकदृष्टि से यहाँ पापोदयजन्य बाह्य प्रतिकूलता को दुख और पुण्योदय से प्राप्त बाह्य अनुकूलता को जो आत्मसाधना के साथ क्षणिक सुख होता है, थोड़ी–बहुत आकुलता कम होती है, उसे ही यहाँ सुख कहा गया है।

यह सुख भी अहिंसा, दया आदि व्यवहार धर्म का ही फल है। अत: अहिंसक, दयामय आचरण करने का उपदेश भी दिया गया है।

सम्यग्दर्शन जिसकी जड़ है ह्न ऐसा यह गृहस्थ का धर्म महर्द्धिक देवों की लक्ष्मी प्रदान करता है और पूर्णता से पालन किया हुआ मुनिधर्म मोक्षसुख को देनेवाला है।

जो मात्र अर्वाचीन बात को ही देख सकते हैं ह्न ऐसे आत्महिताभिलाषी मनुष्य छद्मस्थ जीव स्वर्ग और मोक्ष के मूलभूत समीचीन धर्म का स्वरूप जानने के लिये चार अनुयोगों में निबद्ध जिनशास्त्रों का अध्ययन करें।

द्रव्यश्रुत और भावश्रुत के भेद से प्राप्त हुआ द्वादशांगरूप श्रुतज्ञान आप्त के द्वारा प्रगट होता है और आप्त वही है जो वीतरगी एवं सर्वज्ञ हो; रागादि दोषों तथा ज्ञानावरणादि कर्मों के आवरण से रहित हो। इस सर्ग में इसके बाद श्लोक 12 से सर्ग के अन्त तक 152 श्लोकों में द्वादशांग में निरूपित विषयवस्तु का सूक्ष्म विवेचन है।

समस्त द्रव्यश्रुतज्ञान के अक्षरों का प्रमाण एक लाख चौरासी हजार चार सौ अड़सठ कोड़ाकोड़ी, चवालीस लाख सात हजार तीन सौ सत्तर करोड़, पंचानवे लाख इक्यावन हजार, छह सौ पंद्रह है। यह श्रुतज्ञान मतिज्ञानपूर्वक होता है, परोक्ष है और अनन्त पदार्थों को विषय करनेवाला है।

यह श्रुतज्ञान का विस्तृत वर्णन श्लोक 144 तक है, पश्चात् मतिज्ञान, के भेद–प्रभेदों का वर्णन तथा अवधिज्ञान, मन:पर्यय और केवलज्ञान का वर्णन है, जो इसप्रकार है ह्न ''पाँच इन्द्रियों तथा मन से जो ज्ञान उत्पन्न होता है, उसे मतिज्ञान क हते हैं। यह मतिज्ञान अनेक प्रकार का है एवं परोक्ष है। यदि पदार्थों के सान्निध्य में होता है तो सांव्यावहारिक प्रत्यक्ष भी कहलाता है। यह मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम की अपेक्षा रखता है तथा अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा के भेद से चार प्रकार का है। अवग्रह आदि चारों भेद पाँच इन्द्रिय और मन – इन छह के द्वारा होते हैं। इसलिये चार में छह का गुणाकरने से मतिज्ञान के चौबीस भेद होते हैं। इन चौबीस भेदों में शब्द, गंध, रस और स्पर्श से होनेवाले व्यंजनावग्रह के चार भेद मिलाने से मतिज्ञान के अट्ठाईस भेद हो जाते हैं और अट्ठाईस भेदों में अवग्रह आदि चार मूलभेद मिला देने से 32 भेद हो जाते हैं। इसप्रकार 24, 28 और 32 भेद हो जाते हैं। इसप्रकार 24, 28 और 32 के भेद में मतिज्ञान के भेद के प्रारम्भ में 3 राशियाँ होती हैं। उनमें क्रम से बहु, बहुविध, क्षिप्र, अनि:सृत, अनुक्त और ध्रुव इन छह पदार्थों का गुणा करने पर 144, 168 तथा 192 भेद होते हैं। यदि बहु आदि छह तथा इनसे विपरीत एक आदि छह इन बारह भेदों का उक्त तीन राशियों में क्रमसे गुणा किया जावे तो 288, 336 और 384 भेद होते हैं। मतिज्ञान के ये विकल्प मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम में भेद होने से प्रगट होते है तथा सम्यग्दृष्टी जीवों के होते हैं। मिथ्यादृष्टि जीवों का मतिज्ञान कुमतिज्ञान कहलाता है।

अवधिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से जीव में शुद्धि होने पर देशावधि, सर्वावधि और परमावधि यह तीन प्रकार को अवधिज्ञान होता है। यह अवधिज्ञान देश–प्रत्यक्ष है तथा पुद्गल द्रव्य को विषय करता है। मन:पर्यय ज्ञान भी देशप्रत्यक्ष ही है। इसके विपुलमति और ऋजुमति के भेद से दो भेद हैं तथा यह अवधिज्ञान की अपेक्षा सूक्ष्म पदार्थ को विषय करता है। अवधिज्ञान परमाणु को जानता है तो यह उसके अनन्तवें भाग तक को जान लेता है। अन्तिम केवलज्ञान है। यह केवलज्ञानावरण कर्म के क्षय से होता है, सर्वप्रत्यक्ष है, अविनाशी है और समस्त पदार्थों को जाननेवाला है। परोक्षप्रमाण का फल हेय पदार्थ को छोड़ने और उपादेय पदार्थ को ग्रहण करने की बुद्धि उत्पन्न होना है तथा प्रत्यक्षप्रमाण का फल उपेक्षा–राग–द्वेष का अभाव एवं उसके पूर्व मोह का क्षय होना है।

मतिज्ञानादि चार ज्ञान परम्परा से मोक्ष के कारण हैं और एक अविनाशी केवलज्ञान साक्षात् ही मोक्ष का कारण है। प्रमाण के द्वारा जाने हुए पदार्थों का श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन है और शुभ क्रियाओं में प्रवृत्ति होना सम्यक्चारित्र कहलाता है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र ये तीनों मोक्ष प्राप्ति के उपाय हैं, इसलिए उत्तम सम्पदा की इच्छा करनेवाले पुरुष को इनका श्रद्धान तथा तदनुरूप आचरण करना चाहिए। इन तीनों से बढ़कर दूसरा मोक्ष का कारण न है, न था और न होगा। यही सबका सार है। इसप्रकार आदि जिनेन्द्र के वचनरूपी औषधि का पानकर तीनों जगत सन्देह रूपी रोग से छूटकर ऐसे सुशोभित होने लगे मानो मुक्त ही हो गये हों ह्न मोक्ष को ही प्राप्त हो गये हों। उस कृत युग में जिन जीवों ने रत्नत्रयरूप आभूषणों को पहले से ग्रहण कर रखा था उस समय भगवान की दिव्यधवनि सुनने से उनकी भावना और भी दृढ़ हो गयी तथा कितने ही नवीन लोग मुनिधर्म एवं श्रावक धर्म की दीक्षा ले सम्यग्दर्शनादि गुणों से युक्त हो सुशोभित हुए। निर्मल सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान से युक्त चार प्रकार के देव, चतुर्विध संघ से युक्त तथा जगत में विहार करने के लिए उद्यत श्री जिनेन्द्र भगवान को नमस्कार कर अपने–अपने स्थान पर चले गये। गृहस्थाश्रम से युक्त तथा श्रावकों में मुख्यता को प्राप्त राजा भरतेश्वर, जिनेन्द्र भगवान् की पूजा कर उच्चकुलीन राजाओं के साथ हर्षित होता हुआ अयोध्या की ओर वापस गया।

ग्यारहवें सर्ग के 132 श्लोकों में मुख्यरूप से भरतचक्रवर्ती की दिग्विजय का वर्णन है ह्न यहाँ सर्वप्रथम यह बताया गया है कि भरतजी को एकसाथ तीन सुखद समाचार मिले ह्न 1. तीर्थंकर ऋषभदेव को कैवल्यप्राप्ति 2. पुत्ररत्न की प्राप्ति 3. चक्ररत्न की प्राप्ति।

भरतजी ने सर्वप्रथम समवशरण में जाकर तीर्थंकर भगवान की पूजा की, फिर पुत्र का जन्मोत्सव मनाया, तत्पश्चात् चक्ररत्न की पूजा की और फिर छह खण्ड की विजय प्राप्त करने निकल पड़े। **(क्रमश:)**

कहान सन्देश

मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान

(सम्यग्दर्शन पुस्तक के आधार से)

(102 वीं किस्त)

(गतांक से आगे .....)

एक ब्राह्मण था। एकबार जंगल में उसके हाथ में चिन्तामणि आ गई, तब उसने जिस वस्तु का भी चिन्तन किया, वह उसे मिलती चली गई। खाने का सामान, पलंग इत्यादि सोचते ही मिल गये। तभी एक कौआ आया, उसे उड़ाने के लिये उस मूरख ने चिंतामणि फेंककर मारी, बस फिर क्या था, तुरन्त ही मकान, पलंग इत्यादि चले गये और वह जैसा खाली हाथ था, वैसा का वैसा हो गया; उसीप्रकार यह मनुष्य देह अनन्तकाल में इस जीव को मिली है, यह चिंतामणि जैसी है; उसे जो विषय-भोग में फेंक देता है; पर आत्मा की समझ नहीं करता है, वह वास्तव में मूर्ख है। अरे जीव ! ऐसा मनुष्य जन्म पाकर तू दूसरी जगह तो अपनी होशियारी दिखाता है; पर आत्मा की समझ तो करता नहीं है और धर्म की परीक्षा भी नहीं करता है तो तेरी होशियारी किस काम की? थोड़ा समय रहा है भाई ! अब तो आत्मा की समझ कर, निवृत्ति ले और प्रवृत्ति घटा। अहो ! मेरी मुक्ति किसप्रकार होगी? मुझे अब जन्म-मरण नहीं चाहिये ह्न इसप्रकार जिसे अन्तर में भवभ्रमण की त्रास लगी हो, उसे आत्मा की समझ करनी चाहिये। हे आत्मन् ! तूने अनन्तकाल में सभी को परखा; पर आत्मा को नहीं पहिचाना।

परख्यां माणिक मोतीयां, परख्यां हेम-कपूर ।
पण आत्मा परख्यो नहीं, त्यां रह्यो दिग्मूढ़ ।।

एक जवेरी था, वह बहुत बूढ़ा हो गया था। हीरा की परीक्षा करने में वह बहुत होशियार था। एकबार राजा के पास बहुत कीमती हीरा आया, उसने सभी के पास उसकी कीमत लगवाई, अन्त में जवेरी के पास कीमत लगवाई तो उसकी कला से राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उसे इनाम देने का निर्णय किया।

उस राजा का दीवान धर्मात्मा था। शाम को दीवान ने जवेरी को बुलाकर पूछा कि भाई ! तुम हीरा परखना तो जानते हो; पर चैतन्यरत्न आत्मा को कभी परखा क्या ? जिंदगी में कभी धर्म की समझ की? जवेरी को धर्म की कुछ भी खबर नहीं थी; अत: उसने ना कह दी।

दूसरे दिन सवेरे राजा ने जवेरी को बुलाया और धर्मी दीवान से पूछा दीवानजी बोलो इस जवेरी को क्या इनाम दे दूँ ? दीवान ने गंभीरता से कहा कि इसे सात बाँस मारना चाहिये। राजा को आश्चर्य हुआ; अत:उसने दीवान से फिर पूछा अरे ! दीवानजी सात बाँसों का भी इनाम होता है क्या? कुछ रुपया इत्यादि देना चाहिये न? तो दीवान फिर बोला कि इसे सात नहीं; पर चौदह बाँस मारना चाहिये? राजा ने पूछा ह्न ऐसा क्यों? दीवान बोला महाराज ! इसे 80 वर्ष हो गये, इसके लड़के का लड़का हो गया; तो भी अभी तक धर्म समझने की आवश्यकता महसूस नहीं करता है। यहाँ से मरकर कहाँ जायेगा? इसकी इसे जरा भी चिन्ता नहीं है। अरे ! हीरा परखने में जीवन गला दिया; पर आत्मा को परखने की चिन्ता नहीं की। जीवन पूरा होने को आया; फिर भी धर्म की पहचान करता नहीं है; अत: इसे बाँस मारना चाहिये।

जवेरी की आत्मा पात्र थी; अत: वह धर्मात्मा दीवान की बात सुनकर वह बहुत प्रसन्न हुआ और राजा से कहने लगा कि महाराज ! मुझे तुम्हारे रुपयों का इनाम नहीं चाहिये। दीवानजी ने जो कहा वह उचित ही है, उन्होंने यह सीख देकर मुझ पर बहुत उपकार किया है, यही मेरा वास्तविक इनाम है। जो आत्मवेत्ता होता है अथवा जो आत्मवेत्ता की भक्ति करके आत्मवेत्ता होने का इच्छुक होता है, उसका जीवन ही कृतार्थ है, शेष लोगों का जीवन तो लट्ठ मारने योग्य है। ऐसा समझकर जवेरी ने आत्मा की जानकारी करके अपने जन्म को सफल बना लिया।

चैतन्यस्वभाव के अलावा बाहर में कहीं भी सुख नहीं है। यदि संसार में सुख हो तो धर्मात्मा उसे क्यों छोड़ देते हैं? यदि पर में सुख हो तो धर्मात्मा उसे छोड़कर आत्मा का ध्यान क्यों करते हैं? अत: कल्पनातीत और इन्द्रियातीत आत्मा में ही सुख है, उसके सुख की प्रतीति कर और पर की ममता छोड़। भाई ! जो आत्मा को समझता है और उसकी प्रतीति करता है ह्न ऐसे चैतन्यहंस को हम नमस्कार करते हैं।

अनन्तकाल से रखड़ते जीव को शुद्धात्मा की समझ दुर्लभ है। ऐसा बताते हुये श्री आचार्यदेव समयसार की चौथी गाथा में कहते हैं कि (1) काम-भोग-बंधन की कथा तो सभी जीवों को सुनने में आ गई है; पर (2) भिन्न आत्मा के एकत्व की बात जीव ने कभी सुनी नहीं है। इससे यह बात निकलती है कि ह्न निगोद में ऐसे अनन्त जीव हैं कि जिन्होंने कभी मनुष्य भव प्राप्त किया ही नहीं है, जो कभी निगोद से निकले ही नहीं हैं, जिन्हें कभी श्रवणेन्द्रिय मिली ही नहीं है तो फिर उन्होंने किसप्रकार काम-भोग की कथा सुनी? श्री आचार्यदेव कहते हैं कि उन जीवों ने शब्द भले ही न सुने हों; परन्तु काम-भोग की कथा के श्रवण का जो कार्य है, उसे तो वह कर ही रहा है, शब्द नहीं सुने; फिर भी उसके भावप्रमाण उल्टा वर्तन तो वह कर ही रहा है। काम-भोग की कथा को सुननेवाला अज्ञानी जीव जो विकार का अनुभव कर रहा है और कह रहा है; अत: उसने भी काम-भोग-बंधन की कथा सुनी है ह्न ऐसा आचार्यदेव ने कहा है।

शुद्धात्मा के भान बिना अनन्तबार अनन्तबार नवमें ग्रेवेयक के भव धारण करनेवाला जीव और दूसरा नित्यनिगोद का जीव ह्न ये दोनों एक ही जाति के हैं। दोनों अशुद्ध आत्मा का ही अनुभव कर रहे हैं। निगोद के जीव को श्रवण का निमित्त मिला नहीं है और नवमें ग्रेवेयक जानेवाले जीव को श्रवण का निमित्त मिलने पर भी उसका उपादान सुधरा नहीं है; अत: उसने शुद्धात्मा की बात सुनी ह्न इसप्रकार यहाँ अध्यात्मशास्त्र में गिनते नहीं हैं। काम-भोग की कथा तो निमित्त है, उसे सुनने का फल क्या? विकार का अनुभव और उस विकार का अनुभव तो निगोद का जीव कर ही रहा है; अत: उस जीव ने काम-भोग की कथा सुनी है। **(क्रमश:)**

(पृष्ठ-1 का शेष ....)

अशोकजी शास्त्री आदि विद्वानों के भी प्रवचन हुये।

प्रशिक्षण व अभ्यास कक्षायें - पं. रतनचन्दजी भारिल्ल, पं. अभयकुमारजी शास्त्री एवं पं. कोमलचन्दजी द्वारा बालबोध और प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कक्षायें ली गईं।

दोपहर 2 से 3.30 बजे तक सर्वश्री पं. कोमलचन्दजी टड़ा, पं. कमलचन्दजी झालरापाटन, डॉ. नरेन्द्रकुमारजी जयपुर, पं. नंदकिशोरजी मांगुलकर शास्त्री, पं. कीर्तिंजयजी गोरे शास्त्री, पं. नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पं. अभयकुमारजी बदरवास, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती रंजना बंसल, श्रीमती राजकुमारी जैन आदि पूर्व प्रशिक्षित शिक्षकों ने प्रशिक्षणार्थियों की अभ्यास कक्षायें लीं।

प्रौढ़ व बाल कक्षायें - प्रौढ़ कक्षाओं में ब्र. सुमतप्रकाशजी द्वारा क्रमबद्धपर्याय, ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन, पं. अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा नयचक्र, पं. दिनेशभाई शहा द्वारा लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका व डॉ. उज्ज्वला शहा द्वारा कारण-कार्य रहस्य तथा ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' द्वारा अंग्रेजी में लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका विषय पर कक्षायें चलाई गईं। इनके अतिरिक्त डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया के निर्देशन में दस विद्वानों ने बालकक्षायें भी लीं।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं पाठशाला समिति का अधिवेशन - दिनांक 19 अप्रैल को आयोजित इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री शान्तिलाल रिखबदासजी शाह मुम्बई ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री कमलजी बड़जात्या उपस्थित थे। पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा ने ट्रस्ट की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। ब्र. यशपालजी ने पाठशाला समिति का प्रगति विवरण दिया। सभा का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई ने किया।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन व दीक्षान्त समारोह - दिनांक 27 मई को प्रशिक्षणार्थियों का सम्मेलन आयोजित हुआ; जिसमें डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पं. रतनचन्दजी भारिल्ल आदि के साथ-साथ सभी प्रशिक्षणार्थी भी उपस्थित थे। अनेक नवप्रशिक्षित छात्रों ने अपने-अपने गृहनगर जाकर नवीन पाठशालायें खोलने की मंशा जाहिर की। रात्रि में दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता श्री बलूभाई ने की। इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने बहुत ही मार्मिक दीक्षांत भाषण दिया। सभा का संचालन पं. पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने किया।

इस आयोजन में सर्वश्री मुकुन्दभाई खारा, कान्तिभाई मोटाणी, सुमनभाई दोशी, प्रवीणभाई वोरा मुम्बई आदि अनेक महानुभावों का सराहनीय सहयोग रहा। आयोजन में अधिकांश समय ब्र. वसन्तभाई दोशी, ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर एवं श्री अनन्तभाई अमोलखराय सेठ भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर 38 हजार 957 रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा एवं 15 हजार 594 रुपये के प्रवचन एवं भजनों के कैसिट व सी. डी. बिकीं। वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक के अनेक सदस्य बने। सम्पूर्ण आयोजन में 972 आत्मार्थी बन्धुओं ने धर्मलाभ लिया।

संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मंदिर गोधान में दिनांक 20 मई से 31मई 2002 तक जौहरी बाजार महिला मण्डल की ओर से बालकों एवं युवाओं को जैन धर्म, दर्शन एवं संस्कृति का सामान्य ज्ञान देने हेतु एक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन श्रीमती सुलेखा दिनेशकुमारजी शाह ने किया। अध्यापन कार्य पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा किया गया। प्रतिदिन श्रीमती प्रभा जैन ने प्रश्नमंच लिया। शिविर में डॉ. शीला जैन एवं श्रीमती पुष्पा सौगानी का विशेष सहयोग रहा।

पर्यटन (तीर्थदर्शन)

सिंहपुरी-सारनाथ (कल्याणक क्षेत्र)

मार्ग-स्थिति : वाराणसी नगर से 8 कि.मी. दूर है।

सारनाथ जैनधर्म के ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ की जन्म-स्थली है। यहाँ भगवान के गर्भ, जन्म, तप एवं ज्ञान कल्याणक सम्पन्न हुये थे। मुख्य सड़क मार्ग पर ही भव्य एवं कलापूर्ण जिनालय में मूलनायक श्रेयांसनाथ की मनोज्ञ एवं प्रभावोत्पादक प्रतिमा है। इसे वाराणसी के भेलूपुरा जैनमंदिर से लाकर संवत् 1881 में प्रतिष्ठित किया गया था। इसके गर्भगृह के समक्ष विशाल सभामंडप है। मंदिर के सामने 2200 वर्ष प्राचीन 103 फीट ऊँचा विशाल कलापूर्ण स्तूप है। जैन विद्वानों की मान्यता है कि इसे महाराज सम्प्रति ने श्रेयांसनाथ की स्मृति में निर्मित कराया था। जबकि कुछ पुरातत्त्ववेत्ता एवं बौद्ध धर्मानुयायी इसे सम्राट अशोक द्वारा निर्मित बौद्धस्तूप कहते हैं। स्तूप के समक्ष मनोहर सिंहद्वार है, जिसके दोनों स्तंभों पर धर्मचक्र एवं शीर्ष पर 4 सिंह निर्मित हैं। इन्हीं की अनुकृति गणतंत्र भारत के राजचिन्ह एवं राष्ट्रध्वज पर अंकित है। इस क्षेत्र का वर्तमान नाम सारनाथ तीर्थंकर श्रेयांसनाथ का विकृतरूप लगता है।

बौद्ध तीर्थ के रूप में इसकी बड़ी मान्यता है। यहाँ भारत के अलावा जापान, इंडोनेशिया आदि देशों के बौद्ध अनुयायियों द्वारा निर्मित कई विशाल व कलापूर्ण मंदिर हैं।

आवास : दिगम्बर जैनमंदिर के सामने सड़क के दूसरी ओर जैन धर्मशाला है।

चन्द्रपुरी (कल्याणक क्षेत्र)

मार्ग-स्थिति : वाराणसी से 20 कि.मी. दूर है एवं सिंहपुरी से 15 कि.मी. दूर मुख्य सड़क से 2 कि.मी. दूर हटकर हैं।

पावन गंगा के तट पर बसा छोटा ग्राम चंद्रोही जैन मान्यतानुसार चंद्रपुरी है; जो भगवान चन्द्रप्रभ की गर्भ, जन्म, तप एवं ज्ञान कल्याणकों की स्थली है। गंगा के तट पर ही दिगम्बर जिनालय है, जिसमें भगवान चन्द्रप्रभ भगवान की प्रतिमा विराजमान है।

इलाहाबाद

मार्ग-स्थिति : दिल्ली-कानपुर से सीधी रेल सेवा, सड़क व वायु यातायात सेवा है।

तीर्थराज प्रयाग इलाहाबाद भारतीय धर्म, संस्कृति, अध्यात्म, शिक्षा आदि का केन्द्र माना जाता रहा है। गंगा, यमुना, सरस्वती के संगम पर बसा तीर्थ भारत के सभी धर्मों के अनुयायियों के लिये श्रद्धा का केन्द्र है।

जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने संगम के सन्निकट किले में वटवृक्ष, जिसे अक्षयवट भी कहते हैं, के नीचे तप करके केवलज्ञान प्राप्त किया था। उनका प्रथम समवशरण भी यहीं आया था। इस नगर में चार शिखरबंद मंदिर हैं जिनकी निर्माण कला उत्तम है। उसमें स्थापित मूर्तियाँ प्राचीन हैं। यहाँ के संग्रहालय में भी अनेक प्राचीन जैन मूर्तियाँ एवं कलाकृतियाँ हैं। यहाँ के अन्य महत्वपूर्ण स्थलों में संगम, विश्वविद्यालय, आनंद भवन आदि हैं।

आवास : चाहचन्द मोहल्ले में जैन धर्मशाला है।

बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम मंदिर ट्रस्ट द्वारा श्री पंच बालयति एवं विहरमान बीस तीर्थंकर जिनालय, साधनानगर में दिनांक 2 जून से 9 जून 2002 तक जैनत्व बाल संस्कार शिविर का भव्य आयोजन किया गया ।

2 जून को शिविर के उद्घाटनकर्त्ता श्री मनीषजी गदिया परिवार एवं झण्डारोहण कर्त्ता श्री कुन्दनमलजी गोधा परिवार था। सभा की अध्यक्षता डॉ. अशोक जैन ने की। मुख्य अतिथि श्री मांगीलालजी पहाड़िया थे, विशिष्ट अतिथि सर्वश्री ऋषभकुमारजी इंजीनियर, रमेशचंदजी पाटनी एवं धनराज नवीनकुमारजी अजमेरा थे।

शिविर में प्रतिदिन लगभग 400 विद्यार्थियों ने लाभ लिया।

सभी बालकों को बस द्वारा प्रतिदिन प्रात: 6.15 बजे साधनानगर मंदिर लाया जाता था। 6.30 से 8.15 बजे तक पण्डित अशोकजी शास्त्री द्वारा प्रक्षाल व पूजन की विधि सिखाई जाती थी, नाश्ते के पश्चात् 8.30 से 9.30 बजे तक बालकों की सामूहिक कक्षा चलती थी, इसीसमय प्रतिदिन पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के समयसार पर सारगर्भित प्रवचन होते थे।

सामूहिक कक्षा के पश्चात् 10 से 11 बजे तक बालबोध पाठमाला भाग-1, 2, 3 एवं वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 की 10 कक्षायें पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अशोककुमारजी शास्त्री मांगुलकर, पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित जागेशजी शास्त्री जबेरा, पण्डित सौरभजी शास्त्री चन्देरी, पण्डित देवेन्द्रजी शास्त्री बण्ड, पण्डित जिनेशजी जैन, पण्डित दीपकजी गंगवाल, पण्डित अनुजजी, पण्डित आदित्यजी एवं श्रीमती आशाबेन द्वारा ली जाती थी।

11 से 12 बजे तक भोजन के पश्चात् 12.30 से 1.30 बजे तक पुन: 10 कक्षायें, 1.30 से 2.30 बजे तक विविध ज्ञानवर्धक खेल तथा नाश्ते के पश्चात् 3 बजे बालकों को घर पहुँचाया जाता था।

सायंकाल 7.45 से 8.15 बजे तक जिनेन्द्र भक्ति तथा 8.15 से 9.15 बजे तक पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये। सभी कार्यक्रम पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

इसी दिन पण्डित नाथूलालजी शास्त्री संहितासूरी ने बालकों व कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुये कहा कि 'मैंने पूज्य गुरुदेवश्री के साथ में अनेक प्रतिष्ठायें कराई हैं, मेरे हृदय में उनके प्रति अनन्य बहुमान है । श्री कानजीस्वामी के सान्निध्य में सभी कार्य समय पर ही सम्पन्न होते थे, वहाँ कभी भी किसी विशिष्ट व्यक्ति या श्रेष्ठी को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता था। उन्होंने मुझे बहुत प्रभावित किया।'

स्थानीय विद्वानों में पं. सुशीलकुमारजी, पं. तेजकुमारजी गंगवाल, पं. क्रान्तिकुमारजी पाटनी, पं. दिलीपजी बाकलीवाल, पं. शशिकान्तजी एवं पं. शांतिलालजी सौगानी महिदपुर की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

शिविर में सर्वश्री विजयजी बड़जात्या, मांगीलालजी पहाड़िया, पदमजी पहाड़िया, राजेन्द्रजी पहाड़िया, राजेन्द्रजी सेठी, इन्द्रजी गंगवाल, देवेन्द्रजी पाटनी, कान्तिलालजी, मथुरालालजी, सुशील काला, राजेश काला, विकास पहाड़िया आदि का सराहनीय सहयोग रहा। श्री चुन्नीलाल सुखदयाल ड्योड्या केसली परिवार का विशेष आर्थिक सहयोग रहा।

दिनांक 8 जून को 355 बालक-बालिकायें परीक्षा में सम्मिलित हुये। परिणाम शत-प्रतिशत रहा। 9 जून को समापन समारोह के अवसर पर सभी बालकों को पुरस्कार वितरण आर. के. जैन साकेतनगरवालों की ओर से किया गया।

समारोह के विशिष्ट अतिथि डॉ. दीपक जैन व श्री ज्ञानभानुजी उज्जैन तथा मुख्य अतिथि श्री दिनेश जैन लारेल गारमेन्ट्सवाले थे। इस प्रसंग पर पण्डित रमेशचन्दजी बांझल ने सभा को संबोधित किया। शिविर रिपोर्ट श्री विजयजी बड़जात्या तथा पंच बालयति मंदिर की रिपोर्ट श्री मनोहरलालजी काला ने सुनाई। श्री मांगीलाल पहाड़िया ने आभारप्रदर्शन किया। संचालन पं.रितेशजी शास्त्री ने किया।- **मनोहरलाल काला**

विशाल धार्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

दिनांक 1 मई से 9 मई तक श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन द्वारा संचालित एवं भ. महावीर नैतिक शिक्षा समिति म.प्र. द्वारा आयोजित शिविर म.प्र के 35 नगरों में एक साथ अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ।

30 अप्रैल को श्री लखमीचंदजी, बीना द्वारा शिविर का उद्घाटन हुआ, जिसमें भोपाल, रायसेन, विदिशा, सागर, गुना एवं ललितपुर इसप्रकार 6 जिलों के 35 स्थानों पर शास्त्री विद्वानों ने समाज को निम्नानुसार लाभान्वित किया।

* सिलवानी (ता. त. चैत्यालय) में पं. अमोल सिंघई परभणी, पं.पंकज दमोह * दहेगांव में पं.नितिन भिण्ड * बेगमगंज (ता.त.चैत्यालय) में पं. आशीष जबेरा * बेगमगंज (आदिनाथ मंदिर) में पं. अजित मौ * उदयपुरा में पं. जितेन्द्र * बरेली में पं.जितेन्द्र सिंगोड़ी * विदिशा (किला अंदर) में पं. ऋषभ ललितपुर * विदिशा (ता.त.चैत्यालय) में पं. अमित जबेरा * विदिशा (चन्द्रप्रभ चैत्यालय) में पं. सौरभ लम्हेटा * विदिशा (स्टेशन मंदिर) में पं. मनीष खड़ैरी * गंजबासौदा (ता.त.चैत्यालय शहर) में पं. विपिन फिरोजाबाद * गंजबासौदा (ता.त.चैत्यालय स्टेशन) में पं. अभिषेक सिलवानी * गंजबासौदा (कु.कु.स्वाध्याय भवन) में पं.चन्द्रप्रभात बड़ामलहरा * ग्यारसपुर में पं. नीरज खड़ैरी * भोपाल (चौक) में पं.प्रशांत मौ * भोपाल (शबरीनगर) में पं.संजय बड़ामलहरा * भोपाल (कोहेफिजा) में श्रीमती विद्या सौगानी * बैरसिया में पं. धर्मेन्द्र बड़ामलहरा * बीना में पं.अशोक रायपुर * सागर (ता.त.चै.) में पं. प्रदीप दमोह * सागर (मकरोनिया) में मनीष रहली, पं. विपुल दलपतपुर व पं. स्वप्निल नागपुर * खुरई (ता.त.चै.) में पं.निकलंक कोटा * खुरई (पार्श्वनाथ मंदिर) में पं.जिनेन्द्र व पं.प्रक्षाल उदयपुर * ललितपुर में पं.भानु खड़ैरी * बानपुर में पं.विकास जैन * अशोकनगर में पं. प्रमोद शाहगढ़ द्वारा महती प्रभावना हुई।

शिविर में तीनों समय **बालकक्षा** में धार्मिक नैतिक शिक्षा, **प्रौढ़ कक्षा** में भक्तामर, छहढाला, रत्नकरण्डश्रावकाचार, नयचक्र, लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका, द्रव्य संग्रह, तत्त्वार्थसूत्र तथा **प्रवचन** में समयसार, मोक्षमार्गप्रकाशक, ममल पाहुड, ज्ञान समुच्चयसार, मालारोहण आदि ग्रन्थ चलाये गये।

अंतिम दिन 3580 शिविरार्थियों ने विभिन्न विषयों की परीक्षा दी। प्रात: पूजन-प्रशिक्षण की कक्षा भी चली। लगभग 20 हजार लोगों ने लाभ लिया। जिनवाणी सज्जा प्रतियोगिता में 1200 जीर्ण शीर्ण शास्त्र सुसज्जित किये गये।

मुख्य प्रभारी पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री बण्डा, संयोजक पण्डित समकित शास्त्री सिलवानी एवं पं.आशीष जैन शास्त्री विदिशा के साथ-साथ अन्य पदाधिकारियों ने शिविर के दौरान निरीक्षण करते हुये समाज में जागृति हेतु निर्देश दिये। समाज के प्रत्येक वर्ग में उत्साह देखकर उन्होंने संतोष व्यक्त किया।

शिविर में अनेक भाई-बहनों ने प्रतिदिन मंदिर आने, स्वाध्याय करने, रात्रि भोजन त्याग, जमीकंद त्याग आदि अनेक प्रकार के नियम लिये।

शिविर में कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री तारण-तरण दि. जैनसमाज सिलवानी एवं बासौदा, सर्वश्री नरेशचंदजी जैन 'नेताजी', अशोकजी जैन भोपाल, प्रेमचन्दजी कोटा, शिखरचंदजी जैन सिलवानी, राजीवजी समैया सिलवानी, सरदारमलजी भल्ला बैरसिया आदि का सराहनीय सहयोग रहा।

9 मई को भोपाल में आयोजित समापन समारोह की अध्यक्षता श्री अशोक जैन भाभा ने की। मुख्य अतिथि श्री ज्ञानभानु झांझरी उज्जैन तथा विशिष्ट अतिथि पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर, श्रीमती सुधा मलैया दमोह एवं श्री आनंद तारण भोपाल थे । प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त छात्रों को पुरस्कृत किया गया। इसीसमय स्थानीय स्तर पर शिविर संचालन में सहयोग देनेवाले शिविर प्रभारियों एवं विद्वानों का सम्मान किया गया। सभा का संचालन श्री सुभाषकाला भोपाल एवं पण्डित समकित शास्त्री सिलवानी ने किया।

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार 48

गतांक से आगे

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

यहाँ यह प्रश्न उपस्थित होता है कि ज्ञानगुण का परिणमन चाहे जघन्य हो चाहे उत्कृष्ट; वह बंध का कारण कैसे हो सकता है ? एक ही आस्रवाधिकार में 'ज्ञानी को बंध नहीं होता' और 'ज्ञानगुण बंध का कारण है' क्या ये दोनों परस्पर विरुद्ध कथन नहीं हैं। इनकी क्या अपेक्षा है ?

यदि यहाँ अपेक्षा नहीं समझी जाय तब तो अज्ञानी को यह कथन पागलों जैसा प्रलाप (विरुद्ध) लगेगा। पागल को समझदार भी पागल ही दिखते हैं। पागलपन तो अज्ञानी में है और वह देखता है आचार्यों में। ज्ञानगुण के जघन्य परिणमन को बंध का कारण कह रहे हैं – इसका आशय यह है कि वास्तव में तो जघन्य परिणमन बंध का कारण नहीं है, बंध का कारण तो एकमात्र मोहनीय कर्म के उदय से होनेवाला मोह–राग– द्वेष परिणाम हैं। ज्ञानगुण तो बंध का कारण है ही नहीं।

आस्रवाधिकार का यह कथन परस्पर विरोधी प्रतीत होता है; लेकिन इसमें विरोध नहीं है। आचार्य कुन्दकुन्ददेव आगे स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि जिनका ज्ञानगुण जघन्यरूप से परिणमन करता है, उनके नियम से राग होता है और वह राग बंध का कारण है।

यहाँ ज्ञान को बंध का कारण इसलिए कहा; क्योंकि वह राग की संगति में है, वह उसका अनिवार्यरूप से साथी है, ज्ञानगुण का जघन्य परिणमन राग के सद्भाव के साथ अविनाभूत है। एकमात्र ग्यारहवें–बारहवें गुणस्थान को छोड़ दें तो जहाँ भी क्षयोपशमज्ञान होगा, वहाँ राग अनिवार्यरूप से होगा। ग्यारहवें और बारहवें गुणस्थान में ज्ञान का क्षयोपशम है और वहाँ राग नहीं है; शेष प्रथम से लेकर दसवें गुणस्थान तक ज्ञान और राग एक साथ ही रहते हैं। राग बंध का कारण होने से उसके साथ में रहनेवाले ज्ञान को भी बंध का कारण कह दिया है। ज्ञानगुण के जघन्य परिणमन के कारण ज्ञानपर्याय को, पर्याय के कारण गुण को और गुण के कारण द्रव्य को ही बंध का कारण कहा है।

आस्रवाधिकार में बंध का कर्त्ता आत्मा को कहा है। किसी परद्रव्य ने बंध नहीं कराया है, स्वयं के कारण ही स्वयं के अपराध के कारण ही दण्ड मिला है, बंध का कारण स्वयं में ही विद्यमान है।

यहाँ बंध की प्रक्रिया की बात चल रही है एवं यह प्रश्न उपस्थित है कि ज्ञानी को आस्रव क्यों नहीं होता ?

सात कर्मों के उदय में होनेवाले भाव बंध के कारण नहीं हैं। मोहनीय कर्म के उदय में होनेवाले भाव ही बंध के कारण हैं; इसमें भी दर्शनमोह मुख्य है, चारित्रमोह उपयोग के प्रयोगानुसार अर्थात् अन्य सात कर्म के उदय में जो भी संयोग मिलेंगे; उसमें उपयोग के प्रयोगानुसार चारित्रमोह बंध का कारण है।

अघातिया कर्म का उदय तो संयोग में ही फलता है और अन्य तीन घातिया कर्म के उदय से जो संयोगी भाव हैं, उसे भी अध्यात्म में संयोग ही कहा है। जैसे क्रोध का संयोग, मान का संयोग। यहाँ क्रोध या मान कर्म को नहीं; अपितु क्रोध नामक जो आत्मा में भाव प्रगट होता है उसे भी संयोग ही कहा है। ज्ञानावरणी कर्म के क्षयोपशम से जो ज्ञान का क्षयोपशम है; उसे भी संयोग ही कहते हैं। संयोगों की उपलब्धि मात्र से बंध नहीं होता; क्योंकि जबतक हमारा पुण्य–पाप का उदय है; तबतक वे संयोग हमारे साथ रहेंगे और पुण्य–पाप का उदय समाप्त होते ही वे चले जाएँगे।

जैसे एक पुलिसवाले की ड्यूटी लगी हुई है; आठ घंटे पूर्ण होने से पहले उसे यदि 50 बार भी जाने के लिए कहा जाएगा तो भी वह वहाँ से जानेवाला नहीं है। आठ घंटे होने के पश्चात् उसे कितना ही कहें पर वह एक सैकिण्ड भी रुकनेवाला नहीं है; क्योंकि वह तुम्हारे अनुसार वहाँ नहीं है, वह तो अपनी ड्यूटी के अनुसार वहाँ खड़ा है।

ऐसे ही कर्म के उदय के अनुसार संयोग हैं। जितने काल तक कर्म का उदय है; उतने काल तक वह संयोग है, उसके पश्चात् वह संयोग चला जाता है। जो संयोग होगा उसके साथ उपयोग का प्रयोग भी होगा। उपयोग के प्रयोग के साथ यदि राग होता है तो बंध होगा। राग होगा तो राग के अनुसार ही बंध होगा। अब यदि चारित्रमोहनीय का राग होता है तो अल्प बंध होकर ही रह जाएगा और यदि यह एकत्वबुद्धिपूर्वक राग है तो अनंत बंध होगा। ज्ञानी के दर्शनमोहनीय अर्थात् मिथ्यात्व है ही नहीं, ज्ञानी के दर्शनमोहनीय का अभाव है; यही कारण है कि ज्ञानी को बंध नहीं होता है, यही आस्रवाधिकार का रहस्य है।

वही भोग ज्ञानी के भी है और वही भोग अज्ञानी के भी है; लेकिन ज्ञानी के बंध होता है और अज्ञानी के बंध नहीं होता है ! यह बात हमारे गले नहीं उतरती है।

देखो ! चार भाई एक साथ एक थाली में एकसाथ भोजन करते हैं; फिर भी उन चारों को एकसा कर्मबंध नहीं होता; क्योंकि चारों के भोजन की गृद्धता में अन्तर है।

यहाँ ज्ञानी–अज्ञानी के संदर्भ में न देखते हुए मात्र अज्ञानी के संदर्भ में देखते हैं। चार अज्ञानी भी यदि एकसाथ भोजन करते हैं तो उन्हें भी एक–सा बंध नहीं होता है। भोजन तो सबने एक जैसा एवं एक ही मात्रा में किया है; इसके अनुसार तो सबको एक जैसा ही बंध होना चाहिए; लेकिन नहीं होता; चारों को बंध उनकी गृद्धता के अनुसार ही होता है।

कोई कम या अधिक भोजन करता है – यह तो पता चलता है; लेकिन इससे गृद्धता का अंतर प्रगट नहीं होता; क्योंकि जबतक भोग का संयोग रहे; तबतक गृद्धता का पता नहीं चलेगा। प्रतिदिन चटनी बनती है, थाली में आती है, चारों भाई खाते हैं; लेकिन ऐसा होते हुए भी चारों को चटनी खाने का

पाप अलग–अलग लगता है। किसी को कम तो किसी को अधिक पाप लगता है।

गृद्धता में अंतर होने के कारण ही उसके पाप में भी अंतर आता है। गृद्धता का पता तो तब चलता है; जब एक दिन थाली में चटनी नहीं आती है। एक भाई भोजन के लिए आता है, तो उसे तो भोजन में कुछ कम है – इसका आभास ही नहीं होता, उसे कोई विकल्प ही नहीं आता, उसके ज्ञान की ज्ञेय वह चीज ही नहीं बनती है। उसे यदि कहते हैं कि हमने चटनी रखी थी, उसे क्यों नहीं ली ? अपने हाथ से भी ले सकते थे; लेकिन उपयोग जाता तो वह लेता। अरे ! सामने ही तो रखी थी; सामने रखने से क्या होता है ? अपना उपयोग ही दूसरी जगह हो तो वह खाने में ही नहीं आएगी।

दूसरा भाई भोजन के लिए आता है तो उसे कुछ भोजन में कमी नजर आती है और वह कहता है – 'भोजन में आज कुछ मजा नहीं आ रहा है, आज भोजन में कुछ कमी है।' इस भाई को भोजन में कमी तो नजर में आती है; लेकिन क्या कमी है ? इसके बारे में पता नहीं चलता है। जब उसे बताया जाता है कि आज भोजन में चटनी नहीं है; तब वह 'चटनी बनाया करो, भोजन में मजा नहीं आता है,' मात्र इतनी शिकायत करता है और भोजन कर लेता है।

तीसरे भाई को जब पता चलता है कि भोजन में चटनी नहीं है, तब वह थोड़ा क्रोधित होते हुए कहता है कि – 'समझ में नहीं आता कमाते किसलिए हैं, तुम लोग दिनभर क्या करती रहती हो ? चटनी तक नहीं बना सकती हो ? कल से चटनी बनना चाहिए।' तीसरा भाई इसप्रकार उपदेश देकर भोजन करके चला जाता है।

चौथा भाई जब भोजन के लिए आता है और देखता है कि चटनी नहीं है तो वह कहता है कि – 'चटनी क्यों नहीं बनी ? जाओ पहले चटनी बनाओ; बाद में भोजन होगा।'

यदि उसे कहते हैं कि 'सामान नहीं है।'

तब वह कहता है – 'बाजार से ले आओ।'

तब उसे कहते हैं कि – 'ठीक है बैठो ! तबतक अन्य लोग तो भोजन करें।'

तब वह कहता है – 'नहीं, मैं यहाँ भूखा बैठा रहूँ और सब लोग भोजन करें – ऐसा नहीं हो सकता; पहले चटनी !'

इसप्रकार जब चटनी नहीं आई, तब उन चारों भाईयों के चटनी खाने के राग में कितना अंतर है ? यह पता चला। यह जो अंतर है, उस अंतर के अनुसार ही बंध होता है। राग में जो अंतर है, वह दुनिया को दिखाई नहीं देता।

घर में चार भाई हैं, पति–पत्नी हैं; सभी के पास भोगों का संयोग तो एक–सा ही है; लेकिन उन चारों भाईयों में एक मिथ्यादृष्टि है, एक सम्यग्दृष्टि है और एक अणुव्रती है। उन चारों को बंध अलग–अलग होता है। चारों भाईयों को जो बंध ा होता है, वह स्वयं के उपयोग के प्रयोगानुसार होता है। उपयोग के प्रयोग में भी वहाँ राग का कितना अंश है एवं वह किस जाति का है ? उसके अनुसार बंध होता है। उस राग की जाति में भी अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण और संज्वलन के अनुसार बंध होता है; चूँकि ज्ञानी को अनंतानुबंध ी मिथ्यात्व संबंधी राग नहीं होता है; अतः जो भी बंध होता है, वह अल्प ही होता है। वह अल्प स्थिति अनुभागवाला बंध भी स्वकाल में समाप्त हो जायेगा। उससे मोक्षमार्ग में कोई बाधा उपस्थित नहीं होती है, यही कारण है कि ज्ञानी के आस्रव नहीं है – ऐसा कहा है।

समयसार के आस्रवाधिकार का मूल उद्देश्य आस्रव क्या है ? ये समझाना नहीं; अपितु ज्ञानी को आस्रव नहीं होता – ये समझाना है।

यहाँ यह प्रश्न उपस्थित होता है कि कौन से ज्ञानी को आस्रव नहीं होता ? क्योंकि ज्ञानी तो सिद्ध भगवान भी हैं।

अरे भाई ! सिद्ध भगवान के आस्रव नहीं होता – यह समझाने के लिए क्या आचार्यश्री को पूरा अधिकार लिखने की जरूरत थी ? एक गाथा से भी काम चलता, सिद्धों के आस्रव नहीं है – यह तो पूरी दुनिया जानती है। अतः एक भी गाथा लिखने की आवश्यकता नहीं थी। अरहंत और मुनिराज सम्यग्दृष्टि हैं – यह बात सबके समझ में आती है। अतः उनके आस्रव नहीं होता है। ये कथन भी सबको सहज समझ में आता है।

आस्रवाधिकार का मूल उद्देश्य तो अविरत सम्यग्दृष्टि ज्ञानी के आस्रव नहीं होता है – यह समझाना है। जैसाकि पूर्व प्रकरण में कहा था कि –

जो जगमें क्चिरें मतिमंद, स्वच्छन्द सदा वरते बुध तैसों।
चंचल चित्त असंजत वैन, शरीर सनेह यथावत जैसों।।
भोग संजोग परिग्रह संग्रह, मोह विलास करै जहं ऐसो।
पूछत सिष्य आचारजसौं यह सम्यकवंत निरास्रव कैसो।।6।।

इस छन्द से स्पष्ट है कि चतुर्थ गुणस्थानवर्ती सम्यग्दृष्टि की वाणी असंयमित है एवं चित्त चंचल है, शरीर से स्नेह भी पहले जैसा ही है।'अविरत सम्यग्दृष्टि चतुर्थ गुणस्थानवर्ती भरत चक्रवर्ती जैसे भी हो सकते हैं। भरत चक्रवर्ती, जो पूरी तरह से अलंकारों से मण्डित हैं, जब सामायिक के लिए खड़े होते थे तो पाँचों अंगुलियों की अंगूठियाँ जमीन पर गिर जाती थी। सभी की दृष्टि अंगूठियाँ के गिरने पर जाती है; लेकिन मुझे यह विचार आता है कि अविरत सम्यग्दृष्टि को इतने रत्नजड़ित अंगूठियों की आवश्यकता ही क्या थी ? यह चतुर्थ गुणस्थान में अधिकतम कितना परिग्रह एवं संयोग हो सकता है – इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।

यहाँ इतने परिग्रह एवं संयोग होने के पश्चात् भी ऐसे जीव को आस्रव नहीं होता, बंध नहीं होता है – यह अज्ञानी जगत को समझाना बहुत कठिन है। सिद्धों को बंध नहीं होता है, आस्रव नहीं होता है – यह समझाना कठिन नहीं है; यह तो सभी की समझ में है। **(क्रमशः)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

वेदी प्रतिष्ठा एवं बाल संस्कार शिविर सानन्द संपन्न

कानपुर : यहाँ 28 मई से 4 जून 2002 तक श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में श्री दि. जैनाचार्य कुन्दकुन्द स्मारक ट्रस्ट एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री शांतिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव एवं द्वितीय बाल युवा संस्कार शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पं. कैलाशचन्दजी अलीगढ़, पं. विमलचन्दजी झांझरी उज्जैन, पं. धनसिंहजी पिड़ावा, पं. प्रकाशचन्दजी मैनपुरी, पं. अशोककुमारजी लुहाड़िया, ब्र. सुकुमालजी झांझरी, पं. संजयजी शास्त्री जेवर, पं. सुधीरजी शास्त्री जबलपुर, पं. शैलेशजी शास्त्री, पं. सुबोधजी उज्जैन, ब्र. समताजी, ब्र. ज्ञानधाराजी आदि के माध्यम से प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना एवं पं. धनसिंहजी 'ज्ञायक' पिड़ावा के द्वारा संपन्न कराये गये। रात्रि में श्री नन्दकुमारजी जैन जबलपुर एवं श्री संजीवजी जैन दिल्ली द्वारा धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। शिविर में लगभग 300 बालकों ने भाग लेकर धर्म के संस्कार प्राप्त किये। इस आयोजन में फैडरेशन के सभी सदस्यों का सराहनीय सहयोग रहा। **ब्र आलोक जैन**

पत्रिका विमोचन सम्पन्न

इन्दौर : दिनांक 10 जून को रामाशाह दिगम्बर जैन मन्दिर मल्हारगंज में भगवान नेमिनाथ की प्रतिमा को विराजमान हुये 150 वर्ष होने के उपलक्ष में दिनांक 24 जून से 30 जून तक होनेवाले कल्पद्रुम विधान एवं शिविर के आयोजन की आमंत्रण-पत्रिका का विमोचन पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के सारगर्भित प्रवचन के बाद उपस्थित विशिष्ट महानुभावों ने किया।

इस अवसर पर पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा जयपुर, पण्डित रमेशचन्दजी बांझल एवं रामाशाह मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री मनोहरलालजी काला ने इस मंगल महोत्सव में सभी साधर्मियों को सम्मिलित होने हेतु आमंत्रण दिया।

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण-पत्र शीघ्र भेजें

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के पास दशलक्षण पर्व के पावन अवसर पर प्रवचनकार विद्वान भेजने हेतु प्रतिवर्ष दिगम्बर जैनसमाज के सैंकड़ों पत्र प्राप्त होते हैं; पर हम सभी जगह विद्वान उपलब्ध नहीं करा पाते हैं; अत: इस वर्ष 'पहले आओ पहले पाओ' की तर्ज पर यह व्यवस्था की जा रही है। एतदर्थ 15 जुलाई 2002 तक प्राप्त होनेवाले आमंत्रणों पर ही विचार करना संभव हो सकेगा, इसके बाद आनेवाले पत्रों पर विचार करना संभव न हो सकेगा। पते में फोन व एस. टी. डी. कोड नम्बर लिखना न भूलें। **– मंत्री, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट**

पण्डित टोडरमल स्मारक का फोन नं. बदला

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर का फोन नं. 515458 बदलकर **707458** हो गया है। कृपया सभी साधर्मी बन्धु नोट कर लें।

बाबू जुगलजी कोटा का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान

कोटा : यहाँ दिनांक 23 जून 2002 को मुमुक्षु समाज के अग्रणी विद्वान, दार्शनिक चिंतक एवं आध्यात्मिक प्रवक्ता आ. बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर श्री कुन्दकुन्द-कहान तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई के संयोजकत्व में साहू रमेशचन्दजी जैन नई दिल्ली की अध्यक्षता एवं वयोवृद्ध विद्वान पण्डित प्रकाशचन्दजी हितैषी नई दिल्ली, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर तथा डॉ. देवेन्द्रकुमारजी नीमच के विशिष्ट-आतिथ्य में अभिनन्दन समारोह आयोजित किया जा रहा है।

ज्ञातव्य है यह सम्मान समारोह 19 से 23 जून तक लगनेवाले जैनदर्शन एवं व्यक्तित्व विकास शिविर के अवसर पर किया जायेगा। इस शिविर में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा जयपुर, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित रामकिशोरजी कोटा, पण्डित धनसिंहजी 'ज्ञायक' पिड़ावा, पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री कोटा, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

इसी अवसर पर श्री कुन्दकुन्द शिक्षण केन्द्र कोटा द्वारा श्री दिगम्बर जैन सीमंधर जिनालय, श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय भवन एवं श्री कुन्दकुन्द शाला का शिलान्यास समारोह भी आयोजित किया गया है। **– बसंत एम. दोसी**

सत्साहित्य नि:शुल्क मंगा लें

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल विरचित **समयसार अनुशीलन भाग -5** नामक पुस्तक पक्की बाइण्डिंग, पृष्ठ - 550 (पाँच सौ पचास), कीमत - 25 रुपया श्रीमती पुष्पाबेन कान्तिभाई मोटाणी, मुम्बई की ओर से मुनिराजों, ब्रह्मचारियों, मंदिरों, संस्थाओं, वाचनालयों एवं मुमुक्षुओं को स्वाध्यायार्थ भेंट की जा रही है।

इच्छुक महानुभाव डाक खर्च के लिये 8 रुपये के डाक टिकट निम्न पते पर भेजकर नि:शुल्क मंगा लेवें। हमारे कार्यालय से हाथों-हाथ प्राप्त करनेवाले महानुभावों को टिकिट देने आवश्यक नहीं है। ध्यान रहे, टिकट भेजने की अन्तिम तिथि 15 जुलाई 2002 है। **पता –** प्रबन्धक, नि:शुल्क सत्साहित्य वितरण विभाग, ए-4, बापूनगर, जयपुर - 15 (राज.)

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) जून (द्वितीय) 2002
आई. आर. / R. J. **3002/02**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित अनुभवप्रकाश** जैनदर्शनाचार्य, एम.ए., बी.एड. एवं **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 515581, 707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 704127